

7

मगन रहो रे...

मगन रहो रे। शुद्धातम में, मगन रहो रे॥
 राग द्वेष पर को उत्पात,
 निश्चय शुद्ध चेतना जात॥
 विधि निषेध को खेद निवार,
 आप आप में आप निहार॥
 मगन रहो रे। शुद्धातम में, मगन रहो रे॥1॥

बंध मोक्ष विकल्प करि दूर,
 आनन्द कन्द चिदातम सूर॥
 दर्शन ज्ञान चरण समुदाय,
 'द्यानत' यह ही मोक्ष उपाय॥
 मगन रहो रे। शुद्धातम में, मगन रहो रे॥2॥



हे भव्य! अपने शुद्धात्म तत्त्व और उसके स्वरूप चिन्तन में तुम मग्न रहो।।टेक।।

ये राग-द्वेष तो पर द्रव्य के विकार हैं, पर से उत्पन्न हुये हैं। निश्चय से तो तुम्हारी जाति चेतन है अतः इष्ट-अनिष्टके खेद का त्याग करो। अपने आप में केवल अपने आत्म स्वरूप का चिन्तन करो, उसे ही निरखो, देखो और जानो पहचानो।

॥१॥

कविवर द्यानतरायजी कहते हैं कि कर्म बंध और मोक्ष, दोनों का विकल्प छोड़ दो। तब सभी विकल्पों से परे यह चैतन्य आत्मा आनंद का पुंज, सूर्य के समान अनुभव में आयेगा। वास्तव में तो दर्शन, ज्ञान और चारित्र की एकता होना ही सम्यक् का उपाय है।।२॥

